सवैये

भाग – 3/4

रसखान

सवैये

बाल्यकाल तथा शिक्षा

रसखान एक जागीरदार पिता के पुत्र थे, इसलिए उनका लालन-पालन बड़े लाड़-प्यार से हुआ ऐसा माना जाता है। ऐसा इसलिए कहा जाता है कि क्योंकि उनके काव्य में किसी विशेष प्रकार की कटुता का सरासर अभाव पाया जाता है। एक संपन्न परिवार में पैदा होने के कारण उनकी शिक्षा अच्छी और उच्च कोटि की हुई थी। उनकी यह विद्वत्ता उनके काव्य में परिलक्षित होती है। रसखान को फारसी, हिंदी एवं संस्कृत का अच्छा ज्ञान था। फारसी में उन्होंने 'श्रीमद्भागवत' का अनुवाद करके यह साबित कर दिया था। इसको देख कर इस बात का आभास होता है कि फारसी और हिंदी पर उनकी अच्छी पकड़ थी। रसखान ने अपना बाल्य जीवन अपार सुख-सुविधाओं में गुजारा होगा। उन्हें पढ़ने के लिए किसी मकतब में जाने की आवश्यकता नहीं पड़ी होगी। ऐसी लोगों की आम धारणा है।

सवैये

<u>तीसरा सवैया</u> :

मोरपखा सिर ऊपर राखिहौं, गुंज की माल गरें पहिरौंगी ।
ओढ़ि पितंबर लै लकुटी बन गोधन ग्वारनि संग फिरौंगी ॥
भावतो वोहि मेरो रसखानि सों तेरे कहे सब स्वाँग करौंगी ।
या मुरलीधर की अधरान धरी अधरा न धरौंगी ॥

सवैये

शब्दार्थ :

मोरपखा – मोर के पंखों से बना मुकुट

राखिहौं -- रखूँगी

गुंज – एक जंगली पौधे का छोटा सा फल

गरे – गले में

पहिरौंगी -- पहनूँगी

पितंबर – पीला वस्त्र

गोधन – गायें रुपी धन

फिरौंगी – फिरूँगी

भावतो – अच्छा लगना

वोहि – जो कुछ

स्वाँग – रूप धारण करना

मुरलीधर – कृष्ण

अधरा – होठों पर

धरौंगी – रखूँगी

ग्वारिन – ग्वालिन

सवैये

गोपियों के संग कृष्ण

मोर मुकुट

सवैये

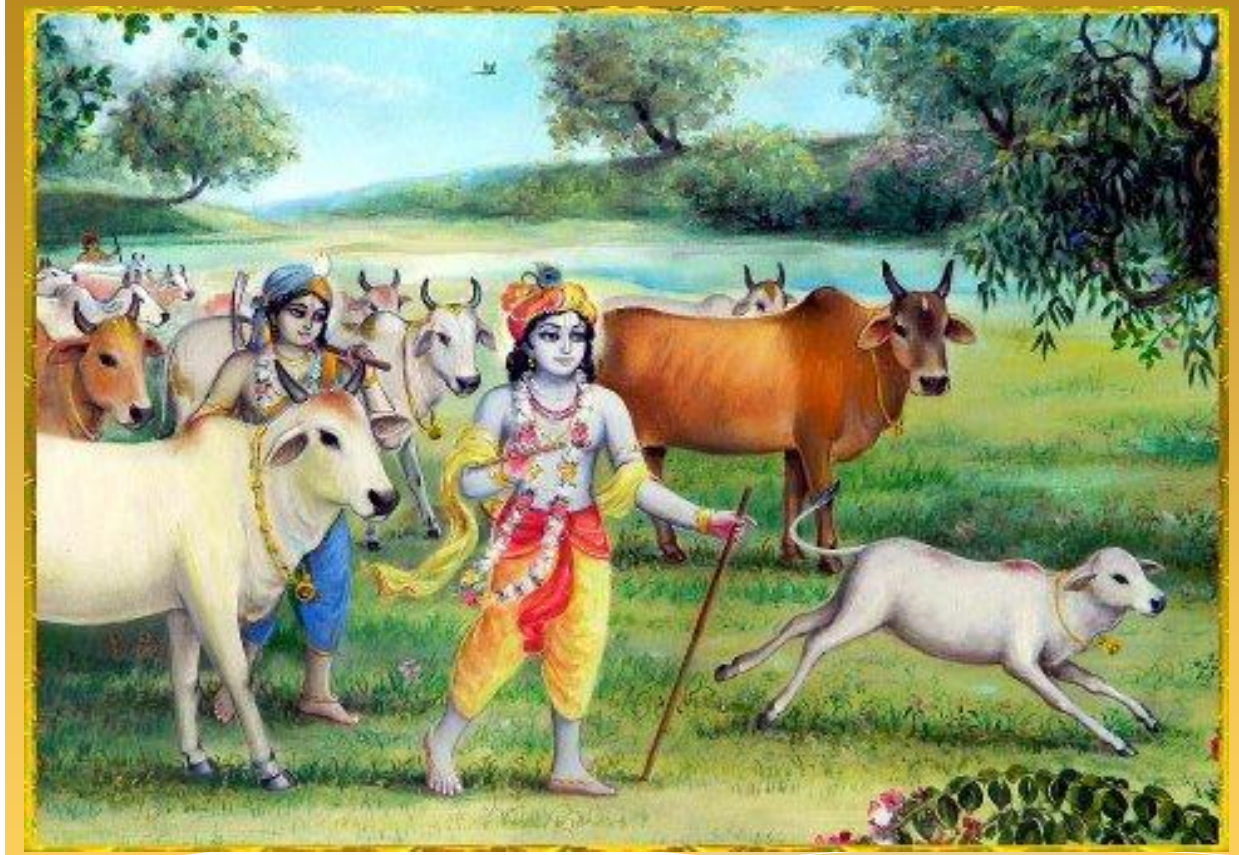

कृष्ण और उनकी गायें

पीताम्बर (पीला वस्त्र)